आज के बदलते जमाने का एक अख़बार
विशाल समाचार
पुणे, गुरुवार, दि. १६ जुलै २०२६

विज्ञप्ति जारी करने १४ जुलाई २०२६

भरतनाट्यम के माध्यम से पुणेकर पांडुरंग की भक्ति में खो गए

पुणे : चेहरे के सूक्ष्म भाव, विशिष्ट हाथों की मुद्राएं, जटिल लयबद्ध पैर की गतिविधियों और शास्त्रीय संगीत के साथ प्रस्तुत किए गए भरतनाट्यम के माध्यम से पुणेकर सचमुच पांडुरंग की भक्ति में खो गए थे.

एमईएस ऑडिटोरियम में फ्यूल एजुकेशन इंस्टीट्यूट द्वारा भक्ति, परंपरा, कला और ईश्वर के बीच संबंधों का उत्सव 'माऊली-एक टाइमलेस ट्रेडिशन' आयोजित किया गया था पंढरपुर वारी की भावना को जीवंत करन वाली कला का अनुभव अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध भरतनाट्यम नर्तक, कोरियोग्राफर

और शोधकर्ता कलईमामणि बाला देवी चंद्रशेखर के एक विशेष प्रदर्शन के माध्यम से किया गया था. कलईमामणि बाला देवी चंद्रशेखर ने अपने नृत्य के माध्यम से पांडुरंग और भक्तों के बीच एक बंधन बनाया. उन्होंने अपनी भक्ति की गहराई को अपने हाथों के इशारों के साथ साथ अपनी आंखों और चेहरे के भावों से भी व्यक्त किया. इस नृत्य के माध्यम से दर्शकों को लगा कि पूरा ब्रह्मांड एक है.

संत तुकाराम, संत ज्ञानेश्वर, संत नामदेव और संत एकनाथ महाराज के विभिन्न अभंगों, ओव्यों और भारुड पर आधारित नृत्य प्रस्तुत किए गए. इसमें उदंड पाहिले उदंड ऐकिले, सुंदर ते ध्यान, रुप पाहता लोचनी, खेळ मांडियला वाळवंटी घाई आणि कशी जाऊ मी वृंदावन, मुरली वाजविते कान्हा जैसी रचनाएँ शामिल थी. अध्यात्म से भरपूर भरतनाट्यम के माध्यम से पंढरी की वारी के इतिहास, संस्कृति और विभिन्न भावनाओं को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया.